भजन

तर्ज–चिगारीं कोई भड़के

प्राणी कोई राह से भटके, तो सतगुरू राह दिखाए
सतगुरू से बेमुख होकर वह ठोकरें खाए

1–बिन सतगुरु ज्ञान न होई,कहे वेद शास्त्र सब कोई
संसार सिंधु है गहरा,बिन सतगुरू पार न होई
न जाना कहां से आए,और लौट के फिर कहां जाना

2–इक पल का भरोसा नही,दुनिया है मुसाफिर–खाना
क्यों जान बूझ के पगले,तू अपना आप गवाए
यह पल पल बीता जाए,न लौट के फिर यह आए